मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

मौर्य वंश (322 ईसा पूर्व से 185 ईसा पूर्व)

- नंद वंश के अंतिम शासक धनानंद को मारकर, जिस व्यक्ति ने मौर्य वंश की स्थापना की यूनानी लेखकों ने उसका नाम **सैंड्रोकोटस** बताया
- सर्वप्रथम सर **विलियम जॉन्स** ने इस व्यक्ति की पहचान **चंद्रगुप्त मौर्य** के से की।

मौर्यकालीन इतिहास जानने के प्रमुख स्रोत

1. कौटिल्य की अर्थशास्त्र
2. मेगास्थनीज की इंडिका
3. विशाखदत्त का मुद्राराक्षस एवं ढुंडीराज का मुद्राराक्षस पर टीका
4. रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
5. बौद्ध ग्रंथ और जैन ग्रंथ
6. अशोक के अभिलेख
7. क्षेमेंद्र कृत वृहतकथामंजरी
8. सोमदेव कृत कथासरितसागर

- **सर विलियम जोंस–** 1784 में **एसियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल** का संस्थापक
- **एसियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल–** भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास, संस्कृति, भाषा एवं विज्ञान के प्रचार एवं प्राच्य अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए
- **एसियाटिक सोसाइटी ऑफ मुंबई – 1804 – James Mackintosh**

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

1. कौटिल्य की अर्थशास्त्र

- **अर्थशास्त्र** की रचना **कौटिल्य** ने की, इन्हे **विष्णुगुप्त** तथा **चाणक्य** के नाम से भी जाना जाता है।
- इन्हे **भारत का मैकियावेली** भी कहा जाता है।
- कौटिल्य की अर्थशास्त्र राजनीति एवं लोक प्रशासन मे लिखी गयी पहली प्रमाणिक पुस्तक है, हालांकि इसमे नाही मौयकालीन शासक का उल्लेख मिलता है नाही मौर्यकालीन राजधानी पटलिपुत्र का विवरण मिलता है। इसमे सैन्य प्रशासन और नगर प्रशासन का भी उल्लेख नही हैं।
- इसके तिथि के विषय मे भी मतभेद है फिर भी इसे मौर्यकालीन माना गया है। 4th सदी में लिखी गयी विशाखदत्त की मुद्रराक्षस में कौटिल्य द्वारा नन्द वंश की सत्ता पलटने का उल्लेख मिलता है।
- इस पुस्तक में **15 अधिकरण (भाग), 180 प्रकरण (उपभाग)** तथा **6000 श्लोक** है तथा यह पुस्तक अन्य पुरुष की शैली में लिखी गयी है।

अर्थशास्त्र के 15 अधिकरण (भाग)

भाग 1 से 5	– राजा की भूमिका, प्रशासन, कानून और न्यायपालिका का उल्लेख
भाग 6	– राज्य के तत्व तथा सिद्धांत पर केन्द्रित
भाग 7 से 14	– विदेश नीति, युद्ध, आक्रमण एवं रक्षा की रणनीति पर केन्द्रित
भाग 15	– ग्रंथ के शोध और विश्लेषण के तरीकों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

अर्थशास्त्र के 15 अधिकरण (भाग)

अधिकरण : 1	विनयाधिकारिक	राजा के विनय, आचरण और सामान्य व्यवहार का वर्णन
अधिकरण : 2	अध्यक्ष प्रचार	26 अध्यक्ष, उनके संगठन एवं विभाग का वर्णन
अधिकरण : 3	धर्मस्थीय	दिवानी न्यायालय, उसके संगठन एवं कार्यो का उल्लेख
अधिकरण : 4	कंटकशोधन	फोजदारी न्यायालय, उसके संगठन एवं दंड का उल्लेख
अधिकरण : 5	योगवृत्त	राजा के प्रति प्रशासनिक अधिकारियों के कर्तव्य तथा कर्तव्यविमुख अधिकारियों को निपटने के तरीके
अधिकरण : 6	मण्डल योनि	राज्य के तत्व एवं सिद्धांतों का उल्लेख कौटिल्य ने राज्य को सात तत्वो से निर्मित माना है, जिन्हे उन्होने राज्य के साप्तांग सिद्धांत कहा हैं। ये निम्न हैं:

सिर	मस्तिष्क	आँखें	कान	मुह	बाहें	जंघा
↓	↓	↓	↓	↓	↓	↓
राजा अर्थात स्वामी	दण्ड अर्थात सेना	अमात्य	मित्र	धन अथवा कोष	दुर्ग अर्थात किले	जनपद अथवा राज्य क्षेत्र
↓	↓	↓	↓	↓	↓	↓
• राजा को राज्य के सिर के तुल्य माना गया हैं।	• सेना को राज्य के मस्तिष्क कहा गया हैं।	• अमात्य राज्य की आँखें है • ये योग्य अधिकारियों का समूह हैं, जिनमे से विभिन्न विभाग के मंत्री तथा अध्यक्षों की नियुक्ति की जाती हैं।	• मित्र राज्य के कान हैं।	• धन अथवा कोष को राज्य का मुह कहा गया हैं।	• दुर्ग अर्थात किले राज्य की बाहें हैं।	• जनपद अथवा राज्य क्षेत्र को राज्य की जंघा कहा गया हैं।

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

अध्यक्ष प्रचार - 26 अध्यक्ष, उनके संगठन एवं विभाग का वर्णन

26 अध्यक्ष

आप सुर कम लगाएं हाथिनी देवी

अ – 4
प – 3
स – 7
क, म, ल, ग – 2
ह, न, दे, वि – 1

आ

- अकराध्यक्ष - खान विभाग
- आयुध्याराध्यक्ष - आयुधगार
- अश्वाध्यक्ष - घोड़ो
- अक्षपटलाध्यक्ष - महालेखाकार

प

- पण्याध्यक्ष - वाणिज्य विभाग
- पौतनाध्यक्ष - माप-तौल विभाग
- पत्तनाध्यक्ष - बन्दरगाह

सुर

- सुराध्यक्ष - आबकारी विभाग
- सूनाध्यक्ष - बूचरखाने
- शुल्काध्यक्ष - व्यापार शुल्क
- सूत्राध्यक्ष - कताई-बुनाई विभाग
- सुवर्णाध्यक्ष - सोने
- सीताध्यक्ष - राजकीय कृषि भूमि
- संस्थाध्यक्ष - व्यापारिक मार्गो का अध्यक्ष

क

- कोष्ठागाराध्यक्ष - कोष्ठागारा
- कुप्याध्यक्ष - वन विभाग

म

- मानाध्यक्ष - दूरी और समय संबंधीसाधन
- मुद्राध्यक्ष - पासपोर्ट विभाग

ल

- लौहाध्यक्ष - धातु विभाग
- लक्षणाध्यक्ष - छापेखाने विभाग (मुद्रा मुद्रित करने वाला)
- टकसाल का प्रमुख अधिकारी - सौवर्णिक

ग

- गणिकाध्यक्ष - गणिका विभाग
- गौ-अध्यक्ष - पशुधन विभाग

ह

- हस्त्याध्यक्ष - हाथी विभाग

न

- नवाध्यक्ष - जहाजरानी विभाग

दे

- देवताध्यक्ष - धार्मिक विभाग

वी

- विविताध्यक्ष - चरागाह विभाग (अन्य कार्य - कुआं/जलाशय निर्माण, जंगल से गुजरने वाले लोगो की रक्षा कार्य)

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

अर्थशास्त्र के 15 अधिकरण (भाग)

अधिकरण : 7	● षांगुण्य	● छः गुणो से युक्त विदेश नीति का उल्लेख।

संधि	विग्रह	यान	आसन	संशय	द्वेधीभाव
↓	↓	↓	↓	↓	↓
सुलह करना	विरोध करना	कूच करना	तटस्थ रहना	आश्रय लेना	दोहरी नीति अपनाना

अधिकरण : 8	● व्यसनाधिकारिक	● राज्य के लिए घातक सभी व्यसनों (दुर्गुणों) का वर्णन।
अधिकरण : 9	● अभियास्यत्कर्म	● दूसरे राज्य में आक्रमण के विचारणीय पहलू हैं।
अधिकरण : 10	● संग्रामिक	● युद्ध संबंधी विजयी नियमो की विवेचना
अधिकरण : 11	● संघवृत्त	● संघ (मित्र) राज्यों में फूट डालने के तरीके वर्णित हैं।
अधिकरण : 12	● आबलीयस	● कमजोर राजा द्वारा शक्तिशाली राजा से बचने के उपाय
अधिकरण : 13	● दुर्ग लम्भोपाय	● शत्रु राष्ट्र के दुर्गो पर कब्जा करने के तरीके
अधिकरण : 14	● औपनिषिदक	● औषधि एवं मंत्रो का महत्व एवं रहस्य और अमल में लाने के तरीके
अधिकरण : 15	● तांत्रयुक्ति	● ग्रन्थ की विवेचना की गई है

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

अर्थशास्त्र में अन्य विवरण

तीर्थ

18 तीर्थ –

प्रशा प्रदेश की सेना सन्निवार को समा गयी
अंत अंत में आटविक द्वारा दुर्गपाल को दंड दिया गया
इसके पश्चात युवराज ने मंत्री परिषद की सलाह पर नगर नायक को व्यावहारिक कर्म करने को कहा

प्रधानमंत्री	अंतपाल	युवराज
प्रशास्ता	अंतर्वशिक	मंत्रिपरिषदाध्यक्ष
प्रदेश्ठा	आटविक	नागरक
सेनानायक	दौवारिक	नायक
सन्निधाता	दुर्गपाल	व्यावहारिक
समाहर्ता	दंडपाल	कर्मन्तिक

गूढ़पुरुष

गुप्तचर विभाग – गूढ़पुरुष
अध्यक्ष – महामात्यसर्प
कौटलिया की अर्थशास्त्र में 2 प्रकार के गुप्तचर का वर्णन है
1– संस्था, 2– संचरा

संस्था – संस्थाओ में संगठित होकर कार्य करने वाले गुप्तचर– 5 प्रकार
विद्यार्थी के वेश में – कापटिक रूप
सन्यासी वेश में – उदास्थित
कृषक वेश में – गृहपतिक
व्यापारी वेश में – वैदेहक
तपस्वी के वेश में – तापस

संचरा – भ्रमणशील गुप्तचर – 4 प्रकार
विशेष प्रशिक्षण वाले गुप्तचर – **सत्री**
शूरवीर प्रकार गुप्तचर – **तीक्ष्ण**
क्रूर प्रवर्ती के गुप्तचर – **रशद**
भिखक्षुणी, समान्यतः वेश्य – **परिव्राजिका**

उभयवेतन – बाहर जाकर नौकरी करने वाले तथा गुप्त रूप से सूचना देने वाले
राज्य मे शांति व्यवस्था बनाए रखने हेतु पुलिस भी थी – रक्षिन

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

अर्थशास्त्र में अन्य विवरण

भू–राजस्व

अर्थशास्त्र के अनुसार भू–राजस्व की दर **1/6** थी। प्राचीन काल से ही ये दर प्रचलित है।

कौटलिया के अनुसार राज्य में 7 प्रकार के आय के स्त्रोत थे
दुर्ग – **नगर** से प्राप्त आय
राष्ट्र – **जनपद/ग्राम** से प्राप्त आय
खनि – **खनिज** से प्राप्त आय
सेतु – **फल–फूल, साग–सब्जी** से प्राप्त आय
वन – **जंगलो** से प्राप्त आय
ब्रज – **पशुधन** से प्राप्त आय
वणिक पथ – **स्थल मार्ग, जल मार्ग** से प्राप्त कर

भू–राजस्व से प्राप्त आय के स्त्रोत
सीता – राजकीय कृषि भूमि पर खेती करने से प्राप्त होने वाली आय
भाग – स्वतंत्र रूप से खेती करने वाले किसानो से प्राप्त आय
मौर्य काल मे इनकी मात्र **1/4** से **1/6** थी।
जहा सिचाई की व्यवस्था राज्य द्वारा की जाती थी वहा **1/3** भाग कर लिया जाता था।

मौर्यकालीन विभिन्न प्रकार के कर
प्रणय – संकट
विष्टि – बेगारी
उत्संग – राजा को उपहार स्वरूप
बलि – धार्मिक कर
हिरण्य – नगद कर अनाज के बदले
रज्जु – भूमि मापन के समय लिया जाने वाला कर
चोर रज्जु – चोरो को पकड़ने पर लिया जाने वाला कर / चोकीदार कर
विवित – चरागाह कर
शुल्क – आयात कर
वर्तनी – सीमा पार करने पर लिए जाने वाला कर
तरदेय – पुल पार करने पर लिए जाने वाला कर
अतिवाहिका– मार्गदर्शक कर
गुल्मदेय – सैनिको की फीस
भोगागम – ज्येष्ठको (शिल्पी संघ के मुख्या)को राजा की ओर से प्राप्त गाँव का राजस्व
सेनाभक्त – किसी अभियान के दौरान गाँव से सेना को अनिवार्य रूप से दिया गया रशद

आयातकर –प्रवेश्य – वस्तु मूल्य का 1/5 भाग
द्वारदेय – आयतित वस्तु पर पुनः लगने वाला कर – प्रवेश्य का 1/5 भाग
(वस्तु मूल्य का 1/25 भाग)

नोट:
देशोपकार/ अनुग्रहित – कुछ देशो की आयतित वस्तु पर कर न लगना, इन्हें कहा जाता था
वैधरण – राज्य में उत्पादित होने वाली वस्तुं यदि आयातित की जाती थी तो उसे वस्तु के आयात में राज्य को होने वाला नुकसान व्यापारी से हर्जाने के रूप लिया जाता था, हर्जाना **वैधरण** कहलाता था।

निर्यात कर – **निष्क्राम्य**

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

अर्थशास्त्र में अन्य विवरण

जहाजरानी

जहाजरानी पर **राज्य** का अधिकार था

शूद्र

कौटिल्य ने पहली बार **शूद्रों को भी आर्य** कहां तथा शूद्रों को आर्य ब्राह्मण तथा वैश्य के तरह **सेना** में भर्ती होने की छूट थी

दास

कौटिल्य ने **नौ प्रकार** के दासों का वर्णन किया है, जिनमें से अहितक स्थायी दास थे

1. जन्म से दास – घर में दासी से उत्पन्न दास – **गृहदास**
2. पेट से दास – **उदरदास**
3. पैतृक दास – पैतृक संपत्ति के रूप में प्राप्त दास – **दयागत**
4. स्वयं को बेचने वाला दास – **आत्मविक्रयी**
5. खरीदा हुआ दास – **क्रीत**
6. युद्ध में जीत गया दास – **ध्वजाहृत**
7. दंड परिणाम स्वरूप बना दास – **दंडप्रणित**
8. दान में प्राप्त दास – **लब्ध**
9. ऋण के बदले धरोहर के रूप में रखा गया दास – **अहितक**

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

2. मेगास्थनीज की इंडिका

- मेगास्थनीज **सेल्यूकस निकेटर** का **राजदूत** था जो की चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में **304 ईसा पूर्व से 299 ईसा पूर्व** तक रहा।
- इसने **इंडिका** नामक ग्रंथ की रचना की जो की मौर्यकालीन इतिहास के बारे में विश्वसनीय जानकारी प्रदान करती है, हालांकि यह पुस्तक मूल रूप में उपलब्ध नहीं है किंतु फिर भी इसके उद्धरण अन्य यूनानी लेखको के उद्धरण से लिया गया है।
- **डॉ स्वानवेग** ने सर्वप्रथम **1846 ईस्वी** में इसके समस्त उदाहरण को संग्रहित कर प्रकाशित करवाया।
- **1891** ईस्वी में **मैक्रींडल** महोदय ने इन समस्या उदाहरण इसका **अंग्रेजी** में **अनुवाद** किया।

मेगास्थनीज की इंडिका से निम्नलिखित महत्वपूर्ण वर्णन प्राप्त होता है

1. शासन का वर्णन
2. पाटलिपुत्र नगर का वर्णन
3. नगर प्रशासन का वर्णन
4. सैन्य प्रशासन का वर्णन
5. राजस्व प्रशासन का वर्णन
6. उत्तरापथ का वर्णन
7. सोने की खान का वर्णन

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

2. मेगास्थनीज की इंडिका

1. शासक का वर्णन

मेगास्थनीज ने अपनी इंडिका में चन्द्रगुप्त मौर्य को संड्रोकोटस कहा तथा शासक के चारों ओर सशस्त्र अंगरक्षक महिला रहती थी।

2. पाटलिपुत्र नगर का वर्णन

मेगास्थनीज ने अपनी इंडिका में पाटलिपुत्र नगर का विस्तृत वर्णन किया है। पटलिपुत्र नगर गंगा तथा सोन नदी के मध्य पूर्वी भारत का सबसे बड़ा नगर था। इसके लंबाई 80 स्टेडिया (16 किमी) तथा चौड़ाई 15 स्टेडिया (3 किमी)थी। नगर चारो ओर से ऊंची ऊंची दीवारों से घिरा था। दीवारों के बाहर गहरी तथा चौड़ी खाई हुआ करती थी। नगर के कुल 64 तोरण (द्वार) तथा 570 बुर्ज (मीनार) हुआ करती थी। भव्यता तथा शानो शौकत में सुसा तथा एकबातना का महल भी तुलना नही कर सकते थे।

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

2. मेगास्थनीज की इंडिका

3. नगर प्रशासन का वर्णन

- मेगास्थनीज ने अपनी पुस्तक इंडिका में नगर प्रसाशन का विस्तृत वर्णन किया हैं।
- इनके अनुसार राज्य में नगर का प्रसाशन **30 सदस्यों** की **6 समितियों** द्वारा होता था तथा **प्रत्येक समिति** में **5 सदस्य** होते थे।
- मेगस्टनीज़ के अनुसार नगर प्रमुख को **एस्ट्रोनोमोई** कहते थे तथा ग्राम के प्रमुख **अग्रोनोमोई** कहलता था।

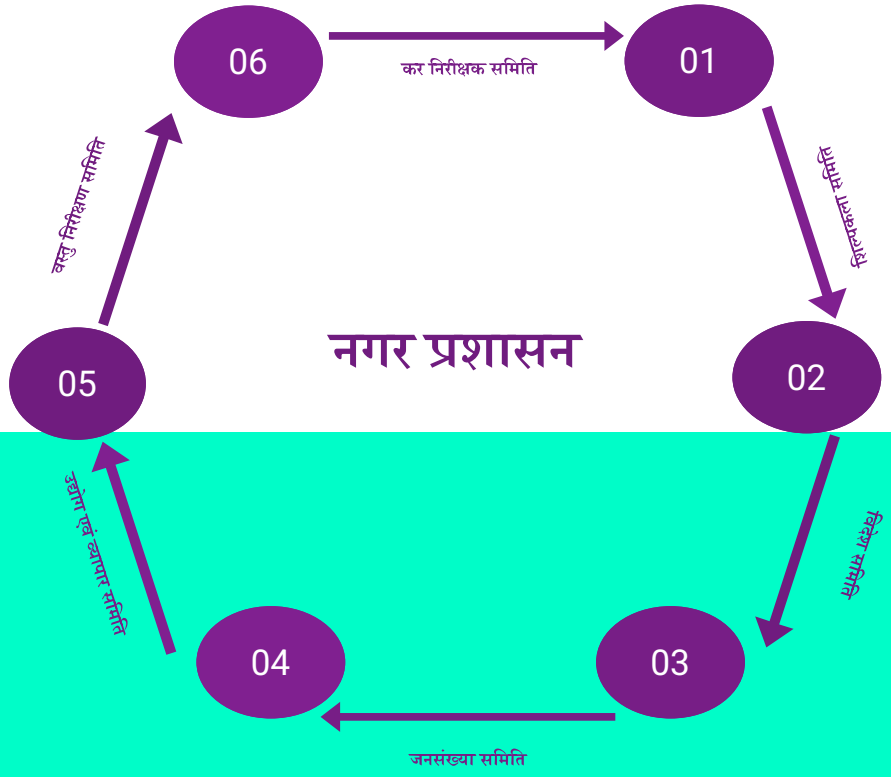

Code: GST PTI

G	वस्तु	वस्तु निरक्षिक समिति
S	से	शिल्पकला समिति
	वा	विदेश समिति
T	कर	कर निरक्षिक समिति
P	Population	जनसंख्या समिति
TI	Trade & Industry	व्यापार एवं उद्योग समिति

नोट:

- कौटिल्य ने अपनी अर्थशास्त्र में **नगर प्रमुख** को **नागरक** कहा।

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

2. मेगास्थनीज की इंडिका

4. सैन्य प्रशासन का वर्णन

- मेगास्थनीज ने अपनी पुस्तक इंडिका में सैन्य प्रसाशन का इतना महत्वपूर्ण बताया की, इसके लिए एक पृथक विभाग था।
- इनके अनुसार राज्य में नगर का प्रसाशन 30 सदस्यों की 6 समितियों द्वारा होता था तथा प्रत्येक समिति में पाँच सदस्य होते थे।

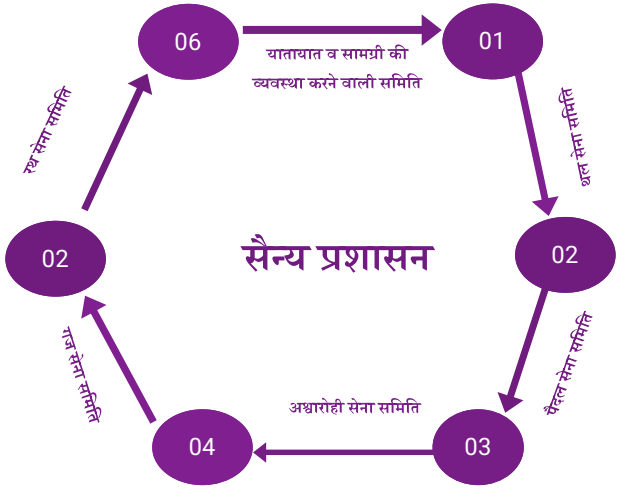

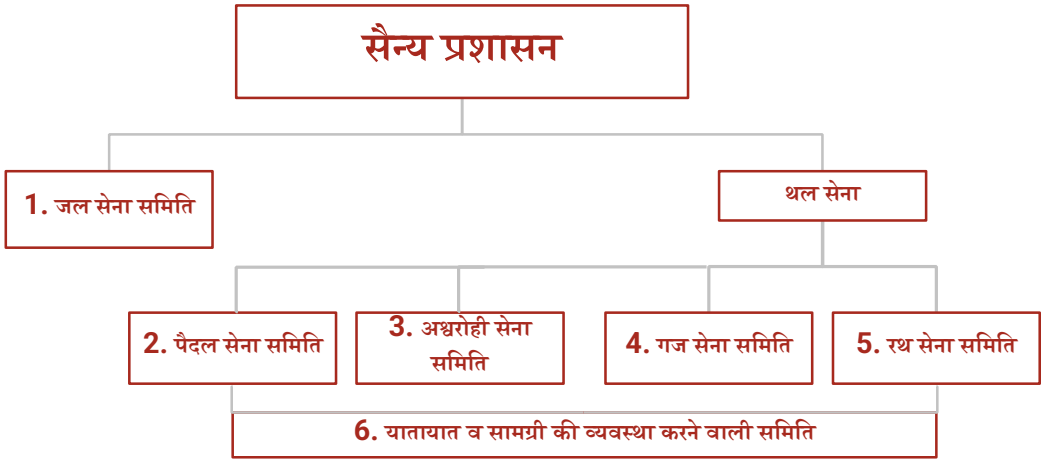

नोट:

- सेना का प्रमुख अधिकारी – **सेनापति**, युद्ध में सेना का प्रमुख नृतत्वकर्ता – **नायक**
- **नवाध्यक्ष** – जहाजरानी विभाग का अध्यक्ष (युद्ध पोत व व्यापारिक पोत का भी प्रमुख अधिकारी)
- **दंडपाल** के अधीन **आयुधगराध्यक्ष** होता था, जो की **अस्त्र शस्त्र** का रख रखाव रखता था।
- **आयुध** का भी उलेख – **शल्यनी** (शत्रुओ पर वार करने पर सैकड़ो सैनिको को मारने वाला
  अग्नियोग (बाणो की अग्निवर्षा करने वाला)
- 4 व्यूह रचना – मण्डल, भोगी, असंहत एवं दंड

अर्थशास्त्र में उलेख है:-

- 3 प्रकार के युद्ध – **प्रकाश युद्ध** (आमने-सामने), **कूट युद्ध** (कूटनीति का प्रयोग) **और तुष्णि युद्ध**(राजपरिवार में फूट डालना)
- 4 प्रकार के दुर्ग – **औदक** (नदी द्वीप),**पर्वत** (पहाड़ो),**धान्वन** (मरुभूमी/झड़ियो),**वन** (जंगल)
- 3 प्रकार के राजदूत:
  निसृष्टार्थ – आमात्य के गुणो से युक्त, स्वतंत्र रूप से किसी भी देश के साथ संधि व समझौता कर सकते थे।
  परिमितार्थ–(अर्द्धस्वतंत्र)–कुछ मामलों में स्वतंत्र अधिकार, परंतु कुछ विशेष मामलों में राजा से परामर्श लेना अनिवार्य था।
  शासनाहार – केवल सूचना देने वाले राजदूत।

कौटिल्य नें पैदल सेना को 6 भागो मे विभाजित किया है:

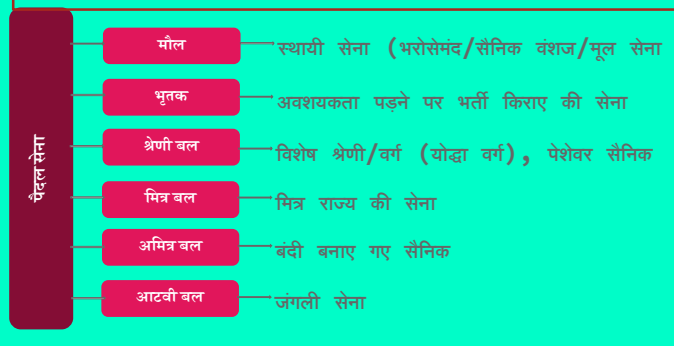

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

2. मेगास्थनीज की इंडिका

5. राजस्व प्रसशन का वर्णन

- मेगास्थनीज के अनुसार राजा भू–राजस्व का 1/4 भाग लिया करता था। ध्यातव्य है की कौटिल्य ने भू–राजस्व की मात्रा 1/6 भाग बताया।

6. उत्तरापथ का वर्णन

- मेगास्थनीज की इंडिका में उत्तरापथ का भी वर्णन मिलता है। यह सड़क सिंध से लेकर बंगाल के सोनार गाँव तक जाती थी। इस सड़क का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के द्वारा कराया गया था।
- 16वी सदी में शेर शाह सूरी द्वारा इस सड़क को पक्का कराया गया तथा इसका नाम शेर शाह सूरी मार्ग व सड़क–ए–आज़म पड़ा।
- ब्रिटिश काल में ऑकलेंड (1836ई० -42ई०)द्वारा इस सड़क का पुनःनिर्माण कराया गया तथा सड़क का नाम जी.टी. रोड (ग्रांड ट्रंक) रोड पड़ा।

7. सोने की खान का वर्णन

- मेगास्थनीज के अनुसार भारत में सोने की उत्कृष्ठ खाने थी, जिनसे पर्याप्त मात्रा में सोना निकाला जाता था।
- उनके अनुसार यहाँ सोना निकालने वाली चीटिया होती थी, जो सोने को बुरादे के रूप में खानो से बाहर लाती थी।
- भारत में सोने की खान के लिए प्रसिद्ध स्थान दर्दिस्तान (कश्मीर) बताया गया है।

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

3. रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख

- शक शासक **रुद्रदामन** के **जूनागढ़ अभिलेख** (150 ई0) में **2 मौर्यकालीन शासक** का उल्लेख मिलता है।
- इसके अनुसार **चन्द्रगुप्त मौर्य** ने **सौराष्ट्र प्रांत** में **सुदर्शन झील** का निर्माण कराया था, उस समय यहा का राज्यपाल **पुष्यगुप्त वैश्य** था।
- **अशोक** के शासनकाल में इस झील का पुनर्निर्माण कराया गया, उस समय उनका राज्यपाल **तुषास्प** था।
- **रुद्रदामन** के समय में इस झील के बाँध का पुनर्निर्माण कराया गया, उस समय उनका राज्यपाल **सुविशाख** था।
- गुप्तकाल में **स्कंदगुप्त** के समय यहा का राज्यपाल **पर्णदत्त** हुआ। उसके पुत्र एवं गिरनार के प्रसाशक **चक्रपलित** के द्वारा इस झील पुनः पुनर्निर्माण कराया गया।
- इस प्रकार से रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में 4 शासक **(चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, रुद्रदामन तथा स्कंदगुप्त)** एवं उनके राज्यपाल का उल्लेख मिलता है।

4. विशाखदत्त का मुद्राराक्षस एवं ढुंडीराज का मुद्राराक्षस पर टीका

- **विशाखदत्त** की **मुद्राराक्षस** में चन्द्रगुप्त मौर्य के **प्रारम्भिक जीवन** की जानकारी मिलती है।
- मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए **वृशल** शब्द का उल्लेख मिलता है। कुछ विद्वान इस शब्द का अर्थ **शूद्र** मानते है, जबकि आधुनिक विद्वानो की मान्यता के अनुसार ये शब्द का अर्थ शूद्र नहीं बल्कि **सामाजिक हीनता का द्योतक** माना है।
- विशाखदत्त की **मुद्राराक्षस** में चन्द्रगुप्त मौर्य को नन्द वंश के अंतिम शासक **धनानन्द का पुत्र** बताया है।
- **मुद्राराक्षस के टीकाकार ढूंदिराज** ने चन्द्रगुप्त मौर्य को **धनानन्द का पौत्र** बताया है।

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

5. बौद्ध ग्रंथ और जैन ग्रंथ

बौद्ध ग्रंथ

- बौद्ध ग्रंथ महाबोधिवंश के अनुसार कौटिल्य ने नन्द वंश का नाश कर चन्द्रगुप्त मौर्य को जंबुद्वीप का राजा बनाया तथा वह एक क्षेत्रीय था।
- बौद्ध ग्रंथ दिव्यवादन के अनुसार बिन्दुसार तथा अशोक क्षेत्रीय थे। अतः चन्द्रगुप्त मौर्य भी क्षेत्रीय होंगे।

जैन ग्रंथ

- जैन ग्रंथ परिशिष्टपर्वन के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य को मयूरपोषको के सरदार की पुत्री का पुत्र बताया गया है। इससे चन्द्रगुप्त मौर्य की क्षेत्रीय उत्पत्ति होती है।

6. क्षेमेंद्र कृत वृहितकथामंजरी तथा सोमदेव कृत कथासरितसागर

- इनमें चन्द्रगुप्त मौर्य को नन्द वंश का बताया गया है।

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

अशोक के अभिलेख

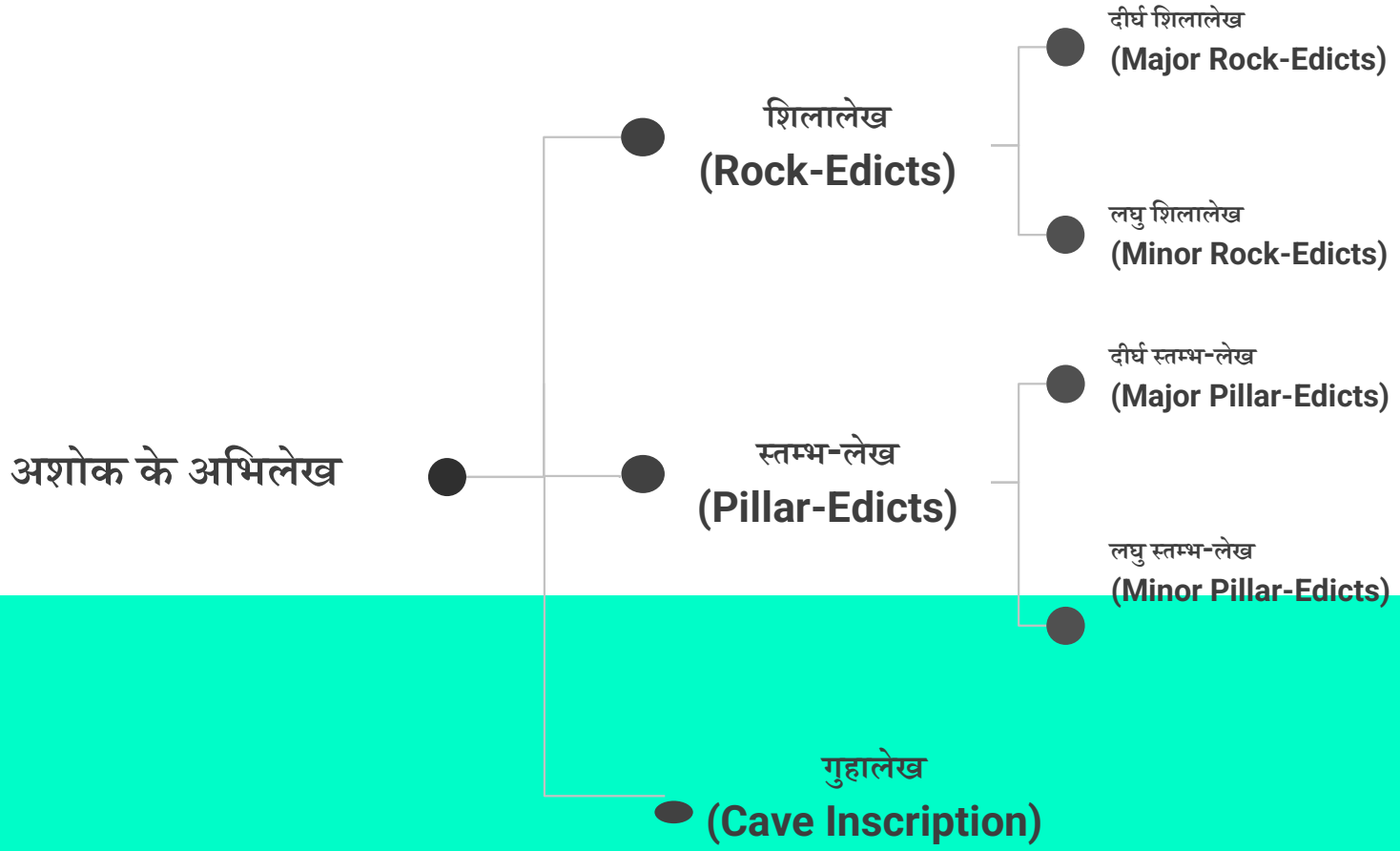

मौर्यकालीन इतिहास

8. अशोक के अभिलेख

- मौर्यकालीन इतिहास के प्रमुख स्रोतों में अशोक के अभिलेखों को एक महत्वपूर्ण स्रोत माना गया है अशोक के अभिलेखों से अशोक कालीन इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है
- सर्वप्रथम डीआर भंडारकर के द्वारा केवल अभिलेखों के आधार पर अशोक का इतिहास लिखने का प्रयास किया गया।
- अभी तक अशोक के लगभग 40 से अधिक अभिलेख खोजे जा चूके हैं। अशोक के अभिलेखों में खोजा गया प्रथम अभिलेख दिल्ली–मेरठ अभिलेख था, जो की टिफेनथेलर महोदय के द्वारा 1750 ईस्वी में खोजा गया, जबकि सर्वप्रथम अशोक के अभिलेख पढ़ने का श्रय जेम्स प्रिंसेप को जाता है, जिन्होंने 1837 ईस्वी में दिल्ली–टोपरा अभिलेख पढ़ने में सफलता पाई। दिल्ली–टोपरा अभिलेख की खोज 1785 ईस्वी में हुई थी।
- अशोक के अभिलेखों को मुख्यतः मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया गया है पहला शिलालेख, दूसरा स्तम्भ लेख और तीसरा गुहालेख।
- इन अभिलेखों में प्राकृत भाषा एवं ब्राह्मी, खरोष्ठी, आरामाईक एवं यूनानी लिपि का प्रयोग किया गया है।
- भारत के बाहर पाए गए अशोक के अभिलेखों की लिपि खरोष्ठी आरामाइक एवं यूनानी है।

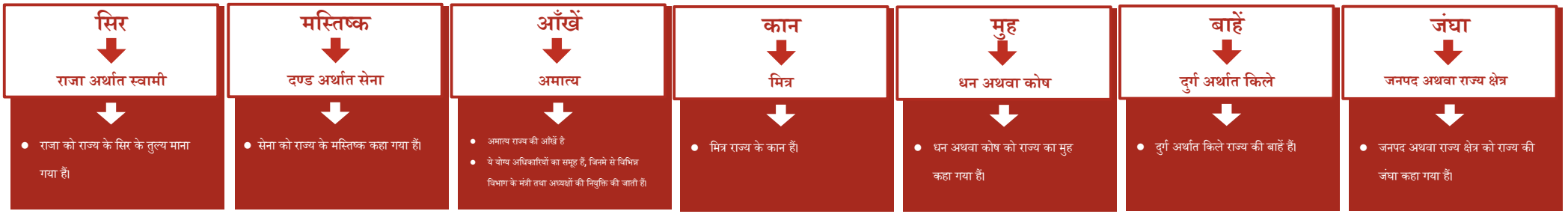

सिर

राजा अर्थात स्वामी

- राजा को राज्य के सिर के तुल्य माना गया हैं।

मस्तिष्क

दण्ड अर्थात सेना

- सेना को राज्य के मस्तिष्क कहा गया हैं।

आँखें

अमात्य

- अमात्य राज्य की आँखें है
- ये योग्य अधिकारियों का समूह हैं, जिनमे से विभिन्न विभाग के मंत्री तथा अध्यक्षों की नियुक्ति की जाती हैं।

कान

मित्र

- मित्र राज्य के कान हैं।

मुह

धन अथवा कोष

- धन अथवा कोष को राज्य का मुह कहा गया हैं।

बाहें

दुर्ग अर्थात किले

- दुर्ग अर्थात किले राज्य की बाहें हैं।

जंघा

जनपद अथवा राज्य क्षेत्र

- जनपद अथवा राज्य क्षेत्र को राज्य की जंघा कहा गया हैं।

पैदल सेना

मौल	भृतक	श्रेणी बल	मित्र बल	अमित्र बल	आटवी बल
स्थाई सेना	आवश्यकता पड़ने पर किराए की सेना	विशेष श्रेणी योद्धा वर्ग से आने वाले पेशेवर सैनिक	मित्र राष्ट्र की सेवा	बंदी बनाए गए सैनिक	जंगली सेना